Higher Education: Global Perspective and Indian Vision

The UNESCO sponsored 2009 World conference on "The New Dimensions of Higher Education" ended on July 08, in Paris, with a call to Governments to increase investment in higher education emphasizing the need for strengthening regional cooperation with a shared vision of higher education's ethical and strategic responsibilities aimed at pursuance of the goals of equity, relevance and quality.

The Indian Nation has to enrich the ongoing western model of higher education by inculcation and integration of Indian vision into it, for sustainable development aimed at obtaining well being for one and all.

The Indian vision of higher education considers development of individuals, and the society, that are physically, morally, ethically, spiritually, and otherwise sound to be able to consider the whole sustainable betterment.

The establishment of the Banaras Hindu University is culmination of the purest thinking of well being of the whole world by harnessing and cultivating the oriental and the modern knowledge as ascribed by ***Pratichi*** and ***Prachee***. The objective of our revered founder Pandit Madan Mohan Malaviya Ji was not only to create another university but to make available a proper vision of higher education to the society, nation and the world.

Today there is a need to make use of developmental models, environmental and ecological considerations, and value oriented cultural heritage for reengineering of the full range of world knowledge in an integrated fashion.

This would be possible only by properly addressing the concerned issues, challenges, and problems by their appropriate definition, examination, investigative study, and following adequate planning and management practices. This seminar, as part of the International BHU Alumni Meet 2009, is an appropriate forum and opportunity for intense deliberation on the topic of **"Higher Education: Global Perspective and Indian Vision"**. It would be proper to accept that besides many aspects, the pertinent points of discussion in the seminar would be:

1. Higher Education : Quality and Reach
2. Higher Education : Internationalization
3. Higher Education : Planning, Designing, Organization, Implementation and Management
4. Higher Education : Innovation and Creativity
5. Higher Education : Global Shortage of Teachers
6. Higher Education : Recognition of Qualifications, Quality Assurance, and Innovation
7. Higher Education : State versus Private players in planning and delivery of higher education
8. Higher Education : Addressing the notions of Equity and Diversity
9. Higher Education : Enrichment of all dimensions of contemporary higher education model by inculcation and integration of the Indian Vision and
10. Creation and development of a morally, ethically and spiritually sound human being, and consequently the society, with purest possible attitude towards the nature and the world.

-Hindi version overleaf

उच्च शिक्षाः वैश्विक परिदृश्य एवं भारतीय दृष्टि

यूनेस्को प्रायोजित "उच्च शिक्षा के नवीन आयाम" विषय पर विश्व सम्मेलन 8 जुलाई को पेरिस में इस आह्वान के साथ समाप्त हुआ कि सरकारों को उच्च शिक्षा में निवेश बढ़ाते हुए तथा वैविध्य बाहुल्य एवं क्षेत्रीय सहकार को प्रोत्साहित करते हुए सामाजिक आवश्यकताओं के लक्ष्य के प्रति समर्पित होना है।

भारतवर्ष में पाश्चात्य उच्च शिक्षा को भारतीय पराविज्ञान की दृष्टि से सम्यक् संवर्द्धित करते हुए, विश्वकल्याण एवं राष्ट्रीय विकास हेतु नियोजित करना उपयुक्त होगा।

उच्च शिक्षा की भारतीय दृष्टि उदात्त भाव एवं नैतिक मूल्यों से पुष्ट, मानसिक, बौद्धिक तथा भौतिक रूप से स्वस्थ मनुष्य एवं समाज की रचना करना है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना **"प्रतीची–प्राची का मेल सुन्दर"** जैसी विश्व कल्याण की ओर उन्मुख उदात्त भाव की परिणति है। हमारे संस्थापक प्रातः स्मरणीय पंडित मदन मोहन मालवीय जी के इस प्रकल्प का उद्देश्य मात्र एक विश्वविद्यालय की स्थापना मात्र ही नहीं वरन् इस विश्वविद्यालय के माध्यम से समाज, राष्ट्र एवं विश्व को उच्च शिक्षा की सम्यक् दृष्टि प्रदान करना है।

आज मानव के सतत एवं समग्र विकास हेतु पर्यावरणीय एवं स्थैतिकी सम्बन्धित तथा मानव मूल्य आधारित संस्कृति एवं ज्ञान सम्बन्धित सभी शिक्षा क्षेत्रों के पुनःअभियंत्रण की आवश्यकता है।

यह कार्य तत्संबंधित चिन्ताओं, चुनौतियों एवं समस्याओं के सम्यक् परिभाषण, परीक्षण, शोध परक अध्ययन एवं समुचित नियोजन तथा उचित प्रबंधन द्वारा ही संभव है। अन्तरराष्ट्रीय पुरा छात्र समागम 2009, दिसम्बर 25–27 की अवधि में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी इस हेतु विचार मंथन का एक उपयुक्त अवसर एवं सशक्त मंच है।

यह मानना होगा कि अन्य विन्दुओं के अतिरिक्त इस संगोष्ठी में अधोलिखित मुख्य विचारणीय बिन्दु होंगेः

- उच्च शिक्षाः गुणवत्ता एवं पहुँच
- उच्च शिक्षाः अन्तरराष्ट्रीयकरण
- उच्च शिक्षाः अभिकल्पन, नियोजन, व्यवस्था, क्रियान्वयन एवं प्रबन्धन
- उच्च शिक्षाः शोध अभिनव क्षेत्र एवं रचनात्मकता
- उच्च शिक्षाः अध्यापक अनुपलब्धता
- उच्च शिक्षाः शैक्षणिक उपाधियों का समीकरण, मान्यता, गुणवत्ता निश्चयीकरण, एवं अभिनव स्वरूप
- उच्च शिक्षाः शिक्षकों हेतु सेवा पूर्व, एवं सेवा की अवधि में, प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं पुनश्चर्या
- उच्च शिक्षाः शासकीय एवं निजी शिक्षणव्यवस्था एवं नियोजन
- उच्च शिक्षा द्वारा समतामूलक एवं बहुआयामीय समाज की संरचना
- उच्च शिक्षा के सभी आयामों का भारतीय दृष्टि के अनुरूप संवर्धन, तथा
- उच्च शिक्षा द्वारा उदात्त भाव वाले नैतिक रूप से स्वस्थ मनुष्य का सृजन एवं विकास।